website : www.pawanprawah.com
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

लेखक डॉ- भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

चिंता, भय व तनाव से मुक्ति- योग में मुद्रा

हमने पिछले 39 (उन्तालिस) अंको में, चिंता, भय व तनाव की समस्या के निदान हेतु अभी तक यह जानकारी मिली है कि नियमित खान-पान नियंत्रण व योग साधना से नकारात्मकता दूर होती है। योगिग क्रियाये चिंतामुक्त के लिये वैकल्पिक रुप मे उपयोगी हो सकती है । इस अंक मे, हम कुछ और योग की प्रमुख सिद्धीयॉ के बारे मे जानकारी हासिल करेंगे जिससे वैज्ञानिक पक्ष प्रस्तुत होता है।

भाग-41

गतांक से आगे

12.7 एक सिद्धी हवा में उड़ने की-1

मै शिवप्रिया, गुरू जी के निकट शिष्य शिवांशु जी की आध्यात्मिक यात्रा का यह अंश कल्पना से परे है जिसे मैने पढ़ा तो आश्चर्यचकित रह गई। शिवांशु जी ने अपने मुफ्त पुस्तक (ई-बुक) और वीडियो सिरीज मे कई साधना वृतांत लिखे हैं, जो एडिटिंग और प्रकाशन अनुमति के लिये गुरू जी के पास प्रतीक्षारत हैं। जब कभी समय मिलता है, तब गुरू जी उन्हें पढ़कर एडिट करते हैं। उसी बीच कई बार मुझे ये खजाना पढ़ने को मिला था, जिसे मै आपके साथ शेयर कर रही हूं।

अपने एक वृतांत में उन्होंने हवा में उड़ते साधू का आंखो देखा हाल लिखा है। सिद्ध साधू से प्राप्त साधना विधान भी लिखा है। साथ ही गुरू जी से मिले उसके वैज्ञानिक पक्ष को भी विस्तार से लिखा है। मै यहां उच्च्च साधकों की प्रेरणा के लिये उनके वृतांत को उन्हीं के शब्दों में शेयर कर रही हूं। लेकिन एक बात के लिये सावधान रहें, इसे सरल लगने के बावजूद भी बिना किसी सक्षम गुरू के मार्गदर्शन के वायुगमन की साधना विधि को न अपनायें। यह बहुत अधिक खतरनाक साबित हो सकता है।

17.7.1 शिवांशु जी का वृतांत उन्ही के शब्दों में...

उन दिनों मेरे मन में बहुत विचलन था। सीधे कहें तो उलझन थी। उलझन की वजह थी विश्वास की कमी। अपने प्रति विश्वास की कमी।

कई सालों से गुरूवर की साधनाओं में शामिल हो रहा था। गुरुदेव व उनके अध्यात्मिक मित्रों के बीच कई तरह के चमत्कारिक अनुभव हो चुके थे। अध्यात्मिक दुनिया के कई ऐसे रहस्य नजदीक से देख चुका था, जिनके बारे में लोग सोच भी नही सकते।

मन में तड़प थी कि मै भी ऐसी ही कोई चमत्कारिक सिद्धी ले लूं। मगर गुरुवर ऐसी किसी साधना की अनुमति ही नही दे रहे थे। जब भी आग्रह करता, वे बिना कारण बतायेय बात को टाल देते। इस कारण सोचने लगा था कि शायद मुझमें सक्षम साधनायें करने की योग्यता ही नही है।

यही सोचकर विचलन हो रहा था, उलझन हो रही थी। एक दिन मै गुरुवर से बड़ी साधना करने की जिद कर बैठा। वे कुछ देर विचारमग्न रहे, फिर बोले ठीक है, तैयार हो जाओ। उनकी अनुमति से मै खुशी से उछ्ल पड़ा। तभी गुरूवर ने कहा कि एक शर्त होगी।

मै शांत हो गया, इतना कि कह सकते हैं उदास हो गया। क्योंकि उनकी शर्तें मामूली नही होतीं। वे बोले जिस साधना के लिये भेज रहा हूं, उसके सिद्धों को देखकर सामान्य रहना होगा। मै समझ गया- दरअसल सिद्ध लोगों के चमत्कार आंखों से देखते ही मै चमत्कृत हो जाया करता था। काफी देर बाद सामान्य हो पाता था। गुरुदेव कहते हैं- सिद्धियों के नतीजे देखकर विस्मित हो जाने वाले लोग सामान्य मनोदशा वाले होते हैंय जबकि सिद्धियों के लिये विशेष मनोदशा की जरूरत होती है। सामान्य लोगों को जो बातें विशेष लगती हैं, वे सिद्ध लोगों के लिये सामन्य होती हैं।

काफी समय से मै खुद को विस्मित करने वाली अध्यात्मिक स्थितियों में भी सामन्य रखने की कोशिश कर रहा था। मेरा विश्वास था कि अब मै इसके लिये तैयार था। सो गुरुवर से कहा अध्यात्मिक चमत्कारों को देखकर बिल्कुल हैरान नही हूंगा। गुरुदेव ने मेरे चेहरे पर पूर्ण दृष्टि डाली दृ मुस्कराये ! जैसे मैने कोई बचकाना बात कह दी हो। वे बोले तैयार हो जाओ - अगले हफ्ते तुम्हें दार्जलिंग जाना है। मै खुश हो गया। आफिस में छुट्टी की अर्जी लगा दी। 5-दिन बाद मै दार्जलिंग के लिये निकल गया। वहां गुरुदेव के एक मित्र मिले। वे एक होटल के मालिक थे। रात में उन्होंने अपने होटल में ही रोका। उनके साथ देर रात तक बातें करके मैने दार्जलिंग और आस-पास के क्षेत्रों की जानकारी हासिल कर ली। अगली दोपहर होटल का मैनेजर मुझे अपनी गाड़ी में लेकर निकला। लगभग ढ़ाई घंटे चल कर हम दार्जलिंग से काफी दूर गांवों की तरफ गए वहां एक गांव में भगवावस्त्र धारी एक व्यक्ति मिला। होटल का मैनेजर मुझे उसके साथ छोड़कर वापस लौट गया।

देखने में वह व्यक्ति योगियों की तरह था। चेहरे पर तेज और शरीर सुडौल, उनका नाम गिरधर था। उनके हाथ में मंहगा मोबाइल था। गिरधर के हाव-भाव, चाल-ढाल से संस्कारों की सम्पन्नता झलकती थी, उनका व्यक्तित्व बहुत सम्मोहक था।

गिरधर की बातों से लगा कि वे गुरुवर को बहुत अच्छी तरह जानते थे। वे गुरुदेव का बहुत सम्मान करते थे। इस नाते मेरे प्रति भी बड़ा अपनापन दिखा रहे थे। कुछ ही देर में हम एक दूसरे से परिचित हो गये और अपने से लगने लगे।

गिरधर मुझे पगदंडियों के रास्ते जंगलों की तरफ ले जा रहे थे। कई किलोमीटर तक रास्ते सवारी से जाने लायक थे। लोग वहां बाइक और साइकिलों से आ जा रहे थे, फिर भी गिरधर जी मुझे पैदल लिये जा रहे थे।

आगे जंगल शुरू हो गया - वहां सिर्फ पैदल ही चला जा सकता था - हम चलते रहे। जंगलों में अंधेरा जल्दी फैलने लगता है। कुछ ही किलोमीटर चले होंगे कि रास्ते दिखने बंद हो गये। गिरधर जी को शायद इसका अंदेशा था, उन्होंने अपने बैग से दो टार्च निकालीं - एक मुझे दे दी, फिर हम टार्चों के सहारे चलने लगे। कई घंटे चलते रहे। रास्ते में एक जगह एक सन्यासी की कुटिया मिली। कुटिया में सन्यासी और उनके दो-शिष्य थे, वे लोग गिरधर जी को जानते थे। हमने रात वहीं बिताई, सुबह तड़के ही आगे के लिये रवाना हो गये। गिरधर जी ने बताया कि बस कुछ ही घंटों में पहुंच जाएंगे।

मै समझ नही पा रहा था कि जंगल इतना लम्बा है या हम गोल-मोल रास्तों में घूम रहे हैं। चलते-चलते गिरधर जी ने आसमान की तरफ देखते हुए प्रणाम किया। मेरा ध्यान उधर गया - तो नजरें उठाकर ऊपर देखा। मेरी आंखें फटी की फटी रह गई, जो देखा उस पर यकीन नही हो रहा था। गुरुवर के समक्ष किया मेरा दावा टूट गया। मै चमत्कृत हो गया था - मै हैरान हो गया था - मै विस्मित हो गया था - मेरी सोच अभी भी सामन्य ही थी। मै उच्च्च साधकों वाली सोच में नही पहुंच पाया था। वे मेरे गुरुदेव हैं - मुझे आश्चर्य चकित देखकर गिरधर जी ने आसमान की तरफ इशारा करते हुए बताया। वहां ऊपर एक साधु हवा में उड़ रहे थे, उन्हें ही देखकर मेरे होश उड़ गये थे।

12.7.2 जानिए नारदजी के हवा में उड़ने की शक्ति का राज...

विज्ञान प्रसार (वि.प्र.)- विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार की रिपोर्ट अनुसार कुछ सालों पहले चीन के पुरातत्व विभाग ने तिब्बत के ल्हासा में कुछ संस्कृत दस्तावेजों की खोज की है और उन्हें अनुवाद करने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ चंडीगढ़ भेजा गया।

वहां की शोधकर्ता डॉ. रूथ रैना (Ruth Reyna) ने बताया कि इन दस्तावेजों में विमान के अंतरतारकीय माध्यम के निर्माण करने की विधि बताई गई है। अंतरखगोलीय माध्यम या अंतरतारकीय माध्यम हाइड्रोजन और हीलियम के कणों का मिश्रण होता है, जो अत्यंत कम घनत्व की स्थिति में सारे ब्रह्मांड मे फैला हुआ है। अंग्रेजी में अंतरतारकीय को इन्टरस्टॅलर और अंतरतारकीय माध्यम को इन्टरस्टॅलर मीडियम कहते हैं। उन्होंने आगे बताया विमान को संचालित करने के लिए गुरुत्वाकर्षण विरोधी शक्ति की आवश्यकता होती है और लघिमा की शक्ति प्रणाली अनुरूप होती है। लघिमा को संस्कृत में सिद्धि कहते हैं और इंग्लिश में इसे लेविटेशन कहा जाता है। लघिमा योग के अनुसार आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि है। जैसा कि हम अपने ग्रंथो में देखते हैं कि भगवान, ऋषि तथा कई देवता वायु मार्ग द्वारा आते-जाते थे। यह सब वही एंटी ग्रेविटेशन वाली लघिमा शक्ति का प्रयोग करते थे।

इसी लघिमा शक्ति (विमानों के लिए) का वर्णन और प्रणाली, चीन के उन दस्तावोजों में मिली है जिसका अनुवाद किया जा रहा है। लेविटेशन पॉवर कोई तंत्र विद्या नहीं है, बल्कि यह ध्यान के अभ्यास से हासिल शक्ति है। दरअसल यह एक ब्रह्मांडीय शक्ति है, जिसको करने के लिए यम, नियम और तप-ध्यान का पालन किया जाता है।